- प्र स्ता व ना -

हिन्दी उपन्यास सामान्यतः प्रगतिशील और यथार्थवादी रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी का उपन्यास साहित्य तेजी से विकसित होता जा रहा है। हिन्दी उपन्यासकारों की नयी पीढी स्वतंत्रता के बाद की चेतना को ग्रहण करके लिखने में प्रवृत्त हुई है। स्वतंत्रता के बाद उपन्यासकारोंमें विषय और अभिव्यक्ति दोनों दृष्टियों से पर्याप्त प्रगतिवादी चेतना दिखायी देती रही है। जनवादी उपन्यासकारों ने आजादी के बाद समाज को समाजवाद की दिशा में चेतना प्रदान करके समाज को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। जनता की जीती-जागती ज्वलंत समस्याओं का और उसकी परिस्थितियों तथा प्रतिक्रियाओं का सूक्ष्म निरीक्षण एवं परीक्षण करके उपन्यासकारों ने उसके सुख-दुःख, आशा-आकांक्षाओं को वाणी देने का प्रयत्न किया और नयी समाज व्यवस्था के बीच आनेवाली रुकावटों का उल्लेख करके उनके विनाश कारणों की भी चर्चा की है। भैरवप्रसाद गुप्तजी के उपन्यास इसी कसौटी पर पूरे उतरते हैं।

भैरवजी ने शोले 1946, मशाल 1951, गंगामैया 1953, सत्ती मैया का चौरा 1959, धरती 1962, आशा 1963, कालिंदी 1963, एक जिनियस की प्रेमकथा 1963 (पहले यह उपन्यास "उसका मुजरिम" नाम से छपा), रंभा 1964, अंतिम अध्याय 1965, नौजवान 1974, आग और आँसू 1982, बाप और बेटा (दो भाग), भाग्यदेवता, काशिनाथ, हवेली, मास्टरजी (प्रेस में) आदि कुल सत्रह उपन्यास लिखे हैं। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में मैंने उनके बहुचर्चित उपन्यास मशाल, गंगामैया, सत्ती मैया का चौरा, नौजवान, आग और आँसू आदि को चुना है। भैरवजी के सभी उपन्यासों में प्रगतिवादी चेतना उभर उठी है। आजादी के बाद प्रगतिवादी चेतना प्रवृत्ति को बढावा देनेवाले जनवादी तथा प्रगतिवादी उपन्यास लेखकों में भैरवप्रसाद गुप्तजी का नाम प्रमुख रूप में लिया जाता है। उनके इन आलोच्य उपन्यासों में प्रगतिवादी भावधारा के विविध आयाम लक्षित होते हैं। उनके इन आलोच्य उपन्यासों में पूंजीवादी, जमीदार, सरकारी यंत्रणा, सरकारी आंमले, पुलिस आदि की ओर से सामान्य जनजीवन में उपस्थित की जानेवाली असंख्य आपत्तियों तथा इन वर्गों की प्रतिक्रियावादी कारवाईयों का विरोध करते हुए सामान्य जनता के जीवन की प्रतिदिन बढते जानेवाली विविध जटिलताओं का कलात्मक चित्रण देखने को मिलता हैं। जनवादी प्रतिभा के धनि भैरवजी को भारत की सामान्य जनता का चित्रण

... AMBEDKAR LIBRARY
... UNIVERSITY, KOLHAPUR

करने के लिए छोटे बडे गाँवों की ओर दृष्टिपात करना अत्यंतिक स्वाभाविक लगा। इसी प्रेरणा से उन्होंने "मशाल", "गंगामैया", "सती मैया का चौरा", "नौजवान", "आग और आंसू" आदि उपन्यासों का सृजन किया। इन उपन्यासों में उन्होंने "कानपुर", "जवार", "पिअरी" आदि छोटे-बडे गाँवों की स्थिति और गति प्रगतिवादी दृष्टि से पाठकों के सामने रखी है।

स्वतंतत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी के उपन्यास साहित्य में प्रगतिवादी दृष्टिकोण के अनुकरणपर कतिपय लेखकों ने समाजवादी यथार्थवाद का चित्रण किया। यशपाल, राहूल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, नागार्जुन और भैरव प्रसाद गुप्त आदि उपन्यासकार इस कोटि में आते हैं। भैरवप्रसाद जी के पाँच आलोच्य उपन्यासों में व्यक्त प्रगतिवादी चेतना संबंधि सभी अवधारणाओं को उनके सही आशय के साथ तलाशने का प्रयत्न हमने किया है।

हमारी दृष्टि से प्रगतिवादी चेतना, प्रगतिशील चेतना, सामाजिक चेतना, वर्गचेतना आदि भिन्न-भिन्न अवधारणाएँ न होकर वे एक-दूसरे से जुडी हुअी एवं अन्योन्याश्रित हैं। भैरवजी के उपन्यासों में प्रगतिवादी चेतना के अंतर्गत मैंने प्रगतिवादी चेतना की अनेक विधाओं पर प्रकाश डालने का काम किया हैं उदा. "मशाल" में मजदूर-चेतना, "गंगामैया" में कृषक-चेतना, "सती मैया का चौरा" में साम्प्रदायिक-चेतना, "नौजवान" में छात्र-चेतना, "आग और आँसू" में नारी-चेतना एवं सर्वहारा मजदूर-चेतना आदि भैरवजी के उपन्यासों में चेतना प्रवृत्ति के विविध आयाम लक्षित होते हैं। भैरवजी ने परंपराओं को तोडकर विधवा विवाह संपन्न कराने का महत्वपूर्ण काम "गंगामैया" में करके प्रगतिवादी चेतना का एक अच्छा उदाहरण पाठकों के सामने रखा है।

भैरवजी प्रगतिवादी चेतना प्रवृत्ति के सबल समर्थक, स्पष्टवादिता के प्रबल पक्षधर, मार्क्सवादी चिंतनधारा के अनुगामी लक्षित होते हैं। बचपन से अभावों और विषमताओं से संघर्ष करनेवाले भैरवजी ने किसान-मजदूरों के जीवन की विडंबनाओं को नारी शोषण के विविध आयामों को, सर्वहारा किसान मजदूरों की सामंतों, पूंजीपतियों द्वारा होनेवाले शोषण की अवस्थाओं को सरकार के विभिन्न माहौलों में व्याप्त भ्रष्टाचारों को, पुलिस अत्याचारों को परंपरागत चली आयी रूढी एवं प्रथाओं को निर्भिकता के साथ चित्रित किया है। भैरवजी ने ग्रामीणों के हृदय में प्रगतिवादी चेतना को फूंकने का काम सफलतापूर्वक किया है। उनकी इस चेतना प्रवृत्ति में भारतीय किसानों और मजदूरों के अभावों और अत्याचारों में सिसकती, कराहती आत्माओं से साक्षात्कार कराया है। भैरवजी की क्रांतिकारी विचारधारा, उनकी मार्क्सवादी सैध्दांतिकता, संगठनात्मक सूझ-बूझ उनके पात्रों में स्पष्ट लक्षित होती है।

भैरवजी के उपन्यासों में द्वितीय विश्वयुध्दोत्तर आर्थिक संकट, फासिस्टो-नाजियों द्वारा

राष्ट्रीय शक्तियों का दमन, ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा जनता का आर्थिक और राजनीतिक शोषण, साम्राज्यवादी शक्तियों की पराजय, पूंजीवाद का उदय, रूस की विजय के साथ-साथ समाजवाद की स्थापना, कम्युनिस्ट पार्टी तथा प्रगतिशील राजनीतिक दलों का उदय, उनकी सक्रिय कार्यप्रणाली, राजनीतिक गतिविधियाँ, सन 1942 का भारत छोडो आंदोलन, कांग्रेस का वर्गीय स्वार्थ, पूंजीपति वर्ग को मिला संरक्षण, अंग्रेज पुलिस के क्रूर अमानवीय अत्याचार, उनकी दमन नीति, पूंजीपतियों के चंदोंपर चुनाव लडनेवाले नेताओं के ओछे हथकण्डें, नेताओं की आत्मकेंन्द्रितता, पूंजपति शोषण के खिलाफ न्यायोचित मांगों के लिए मजदूर आंदोलन एवं हडतालें, कांग्रेस द्वारा मजदूर नेताओं की गिरफतदारी, कफर्यु तथा धारा 144 एवं काले कानुनों को मजदूरोंपर थोंपाने की प्रवृत्ति, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर संघटनों को अवैध घोषित करके निहत्थे मजदूरों पर लाठी प्रहार करने की अन्यायी नीति, टिअर गैस, बंदूक तथा गोलियों का प्रयोग करने की प्रवृत्ति, अफसरोंद्वारा किया जानेवाला नारी शोषण, मजदूर रैली में बिचौलिया शक्ति के माध्यम से की जानेवाली तोडफोड, पारंपरिक सनातन सामंती नैतिकता, धार्मिक अंधविश्वास, अंध रूढियाँ, अभिजात्य वर्ग की थोथी मान्यताएँ, पुरूष प्रधान समाज के अधिकारों के बीच नारी की विवशता, पातिव्रत धर्म और विधवा स्थिति, जमींदारों की स्वार्थांधता, वर्गीय चेतना का प्रस्फूटन, किसान संगठन, सामुहिक संघर्ष, झुठे तथा फर्जी मुकदमें दायर करने की जमींदारों की प्रवृत्ति, रिश्वत के बलपर आधारित पूंजीपति न्याय प्रणाली, पुलिस तथा सरकारी आमले की कारगुजारी, जमींदारों, महाजनों द्वारा किसानों का शोषण, परती भूमिपर अधिकार जताने की जमींदारों की प्रवृत्ति, साम्प्रदायिकता की दग्धता को बढावा देनेवाली प्रतिक्रियावादी शक्ति, चुनावी हथकंड़ों का प्रयोग, आत्मकेंद्रित पदलोलुप नेताओं के बीच संघर्ष,पण्डे-पुरोहितों के थोथे आडम्बर, महाजनी अत्याचार, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से उत्पन्न बेरोजगारी, एकता को खंडित करनेवाली साम्प्रदायिकता, पदलोलुप अधिकारियों के कार्यकलाप, ग्रामीण विकास योजनाओं पर बडे जमींदारों एवं किसानों का अधिपत्य, शहरों में पूंजीवादी विकास के कारण मजदूरों की कटौती, कृषि औद्योगिकरण, सहकारी कृषि व्यवस्था, कैलासिया जैसी निम्नवर्गीय नारियों का शोषण, आधुनिक पूंजीवादी निरूपयोगी शिक्षा पध्दति के खिलाफ छात्र आंदोलन, विश्वविद्यालयों के अधिकारियों के द्वारा होनेवाले धांदलेबाजियाँ, पुलिस अत्याचार, छात्र आंदोलन को दबाने के लिए किये जानेवाले हथकण्डें, पुरूष प्रधान संस्कृति के कारण नारी का घर के अंदर होनेवाला शोषण,छात्र संगठन की एकता में दरारें उत्पन्न करने के हेतु की जानेवाली हरकतें, पुलिसों की दमननीति, भारत जैसे सामान्य विद्यार्थी में उत्पन्न प्रगतिवादी चेतना, योगेश द्वारा प्रगतिवादी चेतना से संपृक्त होकर छात्र आंदोलन को बढाना, साम्राज्यवादी सामंती वर्ग के शोषणजाल में अटके भारत के जवार कस्बे के व्यापारियों, जमींदारों, महाजनों द्वारा होनेवाला किसानों का शोषण, व्यापारियों द्वारा की जानेवाली

लूट-खसोट, जोर जुर्म के बलपर लगान वसुलने की प्रवृत्ति, जमीदारों के क्रूर अमानवीय अत्याचार, जमींदार और सरकारी अमले के दाँत-काटी-रोटी के संबंध, किसानों का जमींदार और पुलिस के जुर्म के विरूध्द सामूहिक वर्ग-संघर्ष, किसानों की लालझण्डे के प्रति श्रध्दा, सामंति वैभव विलास के चकाचौंध में घुटनशील नारी की छटपटाहट, वेश्या वृत्ति, पुस्त-दर-पुस्त की दासता, वासना से ग्रस्त लौंडी जीवन की विवशता, स्वच्छंदी प्रेम का दमन, अनमेल विवाह से उत्पन्न शारीरिक, मानसिक विकृतियाँ, जमींदारों की प्रवृत्तियों में लल्लन के माध्यम से होनेवाला परिवर्तन, मुंदरी में निर्मित प्रगतिवादी चेतना आदि विविध प्रगतिवादी चेतना के आयामों के साथ भैरवजी ने प्रगतिशील चेतना से संपन्न नये व्यक्तित्व का निर्माण किया है। आलोच्य उपन्यासों के नरेन, शकूर, मंजूर, मटरू, गोपी, पूजन, मन्ने, मुन्नी, योगेश, भरत, चतुरी, लल्लन, मुंदरी आदि पात्रों को भैरव जी ने नये व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करके उनमें प्रगतिवादी चेतना करने का काम किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को हमने छः अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय - **'प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि'** में 'चेतना' शब्द की संकल्पना, प्रगतिवाद का स्वरूप, भारतीय प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि, प्रगतिवाद पर लगाये गये आरोप, प्रगतिवाद और प्रगतिशील में अंतर, प्रगतिवाद की कमियाँ, हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रगतिवाद, प्रगतिवादी उपन्यासों की विकास यात्रा, प्रगतिवाद के आधार भूतसिध्दांत, प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ आदि के साथ प्रगतिवाद की सैध्दांतिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट किया है।

द्वितीय अध्याय - **'भैरव प्रसाद गुप्त जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'** में भैरवप्रसाद गुप्तजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सोचा है। इस अध्याय के अंतर्गत भैरवजी की जन्मतिथी एवं बचपन, शिक्षा-दिक्षा, उनका हिन्दी-प्रचार प्रसार का कार्य, वैवाहिक जीवन, साहित्य सृजन, राजनीतिक गतिविधियाँ, बहुमुखी प्रतिभा के धनि लेखक, अन्य रचनाकारों के प्रति योगदान, उनका व्यक्तित्व आदि का चित्रण करके उनके कई महत्वपूर्ण उपन्यासों का संक्षिप्त में जिक्र किया है।

तृतीय अध्याय - **'भैरव जी के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ'** में वर्ग संघर्ष, नारी शोषण, बेकारी, भ्रष्टाचार, राजनीतिक समस्या, साम्प्रदायिकता की समस्या, औद्योगिकरण की समस्या, अनुपयोगि शिक्षा प्रणाली एवं छात्र आंदोलन, वेठबिगारी आदि समस्याओं को समकालीन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय - आलोच्य **'उपन्यासों का आशय'** इसमें भैरवजी के मशाल, गंगामैया, सत्ती मैया का चौरा, नौजवान, आग और आंसू आदि उपन्यासों का संक्षिप्त में आशय प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय - **भैरव प्रसाद गुप्त जी के उपन्यासों में प्रगतिवादी चेतना'** में रूढी विरोध, शोषितों का

करूण गान, शोषकों के प्रति घृणा और रोष, क्रांति की भावना, मार्क्स तथा रूस का गुणगान, मानवतावाद, वेदना तथा निराशा, नारी जीवन की विवशता, सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण, सामाजिक समस्याओं का चित्रण आदि के माध्यम से प्रगतिवादी चेतना को तलाशने का प्रयत्न किया गया है।

षष्ठम अध्याय - "उपसंहार" में लघु-शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया गया है। साथ-ही-साथ भैरवप्रसाद गुप्त जी के उपन्यासों में चित्रित प्रगतिवादी चेतना के विविध आयामों को तलाशने का प्रयत्न किया गया है।

मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे वेणुताई चव्हाण कॉलेज, कराड के हिन्दी विभाग के रीडर एवं विभागाध्यक्ष प्रा. डॉ. वाय.बी. धुमाळ जी के पांडित्यपूर्ण निर्देशन में शोधकार्य करने का अवसर मिला। उनके उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का ही यह शुभ परिणाम है कि एकनिष्ठ भाव से शोधकार्य में सलग्न रहने की धैर्यशक्ति मैं पा सकी और अंततः कार्य को संपन्न कर सकी। श्रध्देय गुरूवर डॉ. वाय. बी. धुमाळ जी ने मुझे अपने व्यस्त क्षणों में अपना अमूल्य समय देकर बहुमूल्य निर्देशों के द्वारा विषय के सैध्दान्तिक और "प्रगतिवादी चेतना" अध्ययन में उत्साह एवं प्रेरणा दी, उनके शांत, गंभीर व्यक्तित्व एवं उदार भाव से युक्त ज्ञान के फलस्वरूप यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका है। उनके प्रति यह शाब्दिक आभार मेरे हृदय में स्थित कृतज्ञतापूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ है।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रा. डॉ. व्ही.के. मोरे जी की मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर निर्देश देकर शोधकार्य का मार्ग प्रशस्त किया। इस लघु-शोध कार्य में मुझे मेरे पिताश्री श्री देविदास निकम और माताजी सौ. नलीनी निकम जी की प्रेरणा मिली इसके कारण ही मैं इस काम में सफलता पा सकी। मेरे कॉलेज के प्राचार्य श्रध्देय बोडस जी ने मुझे प्रेरणा, सहयोग और उचित मार्गदर्शन करके मेरी सहायता की अतः मैं उनके प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। इस लघु-शोध-प्रबंध के कार्य के लिए स्वयं भैरव प्रसाद गुप्त जी ने पुस्तकें जुटाने में मेरी अत्यंत तत्परता से सहायता की साथ-ही-साथ पत्रोत्तर के माध्यम से मेरी समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न किया इसलिए उनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी, जयकर ग्रंथालय, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे के ग्रंथपाल और अन्य कर्मचारी, वेणुताई चव्हाण कॉलेज, कराड के ग्रंथपाल और अन्य कर्मचारी, विलिंग्डन कॉलेज, सांगली के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी आदि की मैं विशेष ऋणी रहूँगी जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में अत्यंत तत्परता से मेरी सहायता की।

इस प्रबंध के टंकन का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य ज्योति इलेक्ट्रानिक्स टायपिंग सेंटर, कराड की प्रबंधक सुश्री ज्योति नांदेडकर जी ने किया, उनके सहकार्य के लिए मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ।

सांगली

दिनांक :

विनित

कु. अे. डी. निकम

१९९९